नेल्ली मैकलुंग

महिला अधिकारों की चैंपियन

नेल्ली मूनी का जन्म 20 अक्टूबर, 1873 को ओंटारियो में चैट्सवर्थ के पास हुआ था. वो छह बच्चों में सबसे छोटी थी. जब वो सात साल की थी, तब उसके परिवार ने अपना खेत बेच दिया. फिर उन्होंने सोरिस वैली, मैनिटोबा में अपने घर से ही काम शुरू किया. नेल्ली बचपन से ही स्वतंत्र और उत्साही थी. एक बार वो शहर की एक पिकनिक में गई. वो उत्सुक थी और उसे उम्मीद थी कि वहां लड़कियों के कोई रेस ज़रूरहोगी. पर वैसा कुछ भी नहीं हुआ. दौड़ते समय लड़कियों की लंबी स्कर्ट उड़ सकती थी. और उस ज़माने में लड़कियों को अपनी एड़ियां और पैर दिखाने की अनुमति नहीं थी. "मैं जानना चाहती थी कि ऐसा क्यों?" नेल्ली ने बाद में लिखा, "लेकिन लोगों ने मुझे चुप रहने को कहा."

उसके बाद नेल्ली खेत के कामों में व्यस्त हो गई और 10 साल की उम्र तक स्कूल नहीं जा पाई. लेकिन इससे उसके सीखने का प्यार कम नहीं हुआ. राजनीति और दुनिया के बारे में उसकी समझ विकसित हुई. कम उम्र से ही उसके लिए निष्पक्षता बहुत महत्वपूर्ण थी.

1889 में, एक शिक्षक बनने के ट्रेनिंग के लिए वो पाँच महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए विन्नीपिग गई. जब नेल्ली 16 साल की तो उसे शिक्षण प्रमाणपत्र मिला और फिर उसने एक-कमरे वाले स्कूल की सभी आठ कक्षाओं को पढ़ाया. वो कभी-कभी छुट्टी के समय छात्रों के साथ फुटबॉल खेलती थी. शुरू में तो माता-पिता ने यह मंजूर नहीं किया, लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने वो स्वीकार किया. अगले साल उसने मैनिटाउ में पढ़ाया. उस दौरान वो रेवरेंड जेम्स मैकलुंग और उनकी पत्नी एनी के घर में रही. एनी मैकलुंग का नेल्ली पर बहुत प्रभाव पड़ा. उन्होंने नेल्ली का 'महिला क्रिश्चियन टेम्परेंस यूनियन' से परिचय कराया. महिलाओं का यह संगठन शराब के कारण पैदा हुई परिवारिक समस्याओं से जूझता था. नेल्ली उनके विचारों से सहमत थी कि लोगों को शराब से पूरी तरह दूर रहना चाहिए.

मैकलुंग के घर में एक अन्य व्यक्ति था - एनी का बेटा वेस्ले, जो पेशे से एक फार्मासिस्ट था. नेल्ली पर वेस्ले का गहरा प्रभाव पड़ा. पांच साल के प्रेमालाप के बाद उसने 1896 में वेस्ले से शादी की और अपना शिक्षण कार्य छोड़ दिया.

वैसे अन्य करियर नेल्ली का इंतजार कर रहे थे. वो पांच बच्चों की मां बनी. 1908 में, 'सोइंग सीड्स इन डैनी' नेल्ली की पहली किताब प्रकाशित हुई. नेल्ली ने कुल मिलकर 16 सफल पुस्तकें लिखीं. 'सोइंग सीड्स इन डैनी' एक लंबे समय तक कनाडा की सबसे ज़्यादा बिकने वाली किताब रही. उसके बाद नेल्ली एक प्रतिभाशाली सार्वजनिक वक्ता और राजनीतिज्ञ बनी.

लेकिन उन्हें महिलाओं के अधिकारों के काम के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है.

1911 में नेल्ली मैकलुंग और उनका परिवार विन्नीपिग चला गया, और फिर वे वहीं के बन गए. वहां पर नेल्ली एक "सुफराजिस्ट" बनीं - यानि महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिले इस मुद्दे पर उसने जमकर काम किया. वो अपने पति और बच्चों के लिए समर्पित थीं और उन्होंने महिलाओं और बच्चों के कठिन जीवन को बहुत करीबी से देखा था. उनमें से कई परिवार गरीब थे, जो कड़ी मेहनत करते थे पर जो साथ में शराब के दुरुपयोग से पीड़ित थे. "वोट के अधिकार के पीछे की असली भावना," नेल्ली ने लिखा, "अन्य महिलाओं के जीवन से सहानुभूति थी. हमारी इच्छा दुनिया को महिलाओं के लिए एक बेहतर जगह बनाना था."

बहुत सी महिलाओं ने अपने जीवन में गरीबी
और कठिन मेहनत का अनुभव किया था

फोर्ट मैकलोड, अलबर्टा में सार्वजनिक भाषण के लिए दिया गया एक विज्ञापन

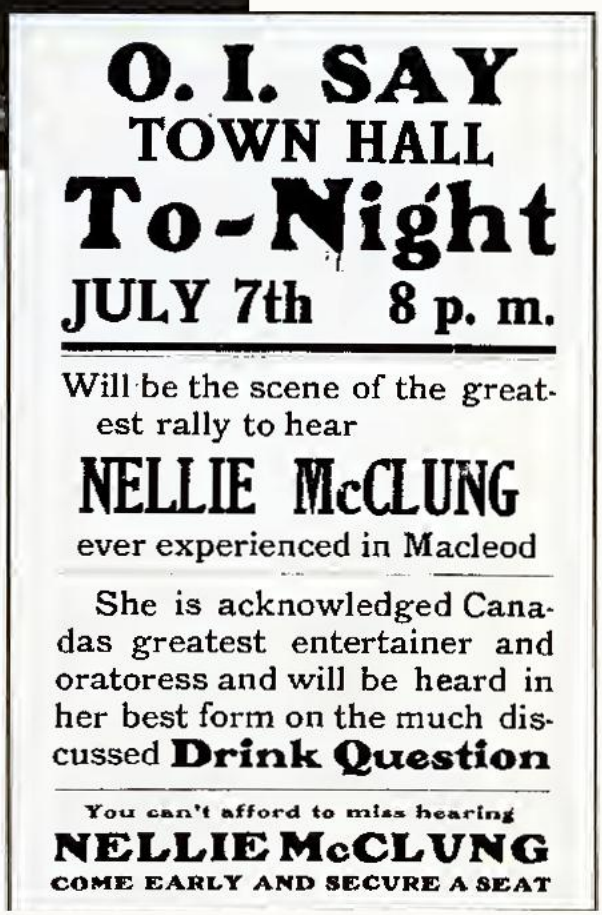

नेल्ली मैकलुंग ने अपनी किताबों में से पढ़ना शुरू किया. उन्होंने अपने भाषणों से अपने श्रोताओं का मनोरंजन भी किया, और उन्होंने "शराब-बंदी" और महिलाओं के अधिकारों के मुद्दे उठाए. 1914 में जब तक उनका परिवार अल्बर्टा शिफ्ट हुआ, तब तक नेल्ली महिलाओं के मताधिकार की एक चैंपियन बन गईं थीं. नेल्ली यह जानती थीं कि वोट देने से महिलाएं शराब के व्यापार को प्रभावित कर सकती थीं. उसके बाद नेल्ली और कुछ अन्य कार्यकर्ता, पीड़ित महिलाओं के लिए वोट का अधिकार जीतने के काम में जुट गईं.

1916 में, उनके काम की बदौलत अल्बर्टा और साथ में सस्काचेवान और मैनीटोबा की महिलाओं ने, वोट देने का अधिकार जीता और अब महिलाएं सार्वजनिक चुनावों के लिए खड़ी हो सकती थीं. 1917 में ब्रिटिश कोलंबिया में भी महिलाओं ने यह अधिकार जीते. अब हालात बदलने लगे थे.

18 जुलाई, 1921 को, नेल्ली मैकलुंग, अल्बर्टा विधानमंडल के लिए चुनी गईं. उससे पहले केवल दो अन्य महिलाओं ने ही कनाडा की प्रांतीय सरकार में काम किया था. महिलाओं के अधिकारों के लिए नेल्ली का काम जारी रहा.

1928 तक, क्यूबेक को छोड़कर महिलाएं कनाडा के सभी प्रांतों में वोट कर सकती थीं. लेकिन अभी भी सेनेट में उनकी नियुक्ति नहीं हो सकती थी, क्योंकि महिलाओं को अभी भी "व्यक्ति" नहीं माना जाता था. क्या महिला, 'व्यक्ति' नहीं थीं? नेल्ली मैकलुंग उससे पूरी तरह असहमत थीं. उन्होंने चार अन्य महिलाओं के साथ मिलकर कनाडा के सर्वोच्च न्यायालय से कानून की सही व्याख्या करने को कहा. जब सर्वोच्च न्यायालय के फैसले ने भी महिलाओं को "व्यक्ति" में शामिल नहीं किया तो उससे पाँचों महिलाएं बेहद नाखुश हुईं. उन्होंने लंदन, इंग्लैंड में कनाडा की सर्वोच्च अदालत में उस मामले की अपील की. फिर 18 अक्टूबर, 1929 को, ब्रिटिश प्रिवी काउंसिल ने फैसला सुनाया जिसमें कानून के तहत महिलाओं को 'व्यक्ति' करार दिया गया. अब महिलाएं कनाडा में सेनेट सदस्य के रूप में कार्य कर सकती थीं.

पाँच प्रसिद्ध महिलाएं

कनाडा में महिलाओं के लिए यह एक महत्वपूर्ण जीत थी. कई लोग इस जीत से नाखुश भी थे. हालांकि, मैकलुंग ने जो किया था, उन्हें उस पर दृढ़ विश्वास था. उन्होंने बाद में कहा, "कभी पीछे मत हटो, कभी सफाई मत दो, कभी माफी मत मांगो - अपना काम पूरा करो और लोगों को चिल्लाने दो."

1 सितंबर, 1951 को विक्टोरिया, ब्रिटिश कोलंबिया में अपने ही घर में नेल्ली मैकलुंग का निधन हुआ. उनकी कब्र पर लगे पत्थर पर लिखा है "प्रेम और यादगार." आज भी उनका नाम अमर है - समान अधिकारों और बेहतर जीवन के लिए महिलाओं के संघर्ष के एक शक्तिशाली कनाडाई प्रतीक के रूप में.

अंत